# सामाजिक-धार्मिक आंदोलन

## उदय के कारण

- आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव व विदेशी शक्ति द्वारा पराजित होने की चेतना ने 19वीं सदी में एक नई जागृति को जन्म दिया।

- विचारशील लोगों (जिन्हे आधुनिक शिक्षा और पाश्चात्य ज्ञान, विज्ञान तथा दर्शन का ज्ञान प्राप्त था) द्वारा जीवन के प्रति पाश्चात्य, मानवतावाद और विवेकपूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने से समाज में समता के सिद्धांत का उत्थान हुआ।

- ईसाई मिशनरियों द्वारा भारतीयों को ईसाई बनाना आरंभ करने के कारण भारतीय अपने धर्म की रक्षा करने के प्रयास में जुड़ गए।

- प्रेस की स्थापना हो जाने से अनेक पत्र-पत्रिकाओं, साहित्य का प्रकाशन हुआ। इनसे भारतीयों के प्रति अंग्रेजों की व्यवहार हीनता, शोषण, क्रुरता का ज्ञान भारतीयों को कराया। फलतः उनमें आत्मसम्मान के सुरक्षा की भावना जाग्रत हुई। उन्होने अपने समाज व धर्म की रक्षा हेतु प्रयत्न आरंभ किए।

## आंदोलन का स्वरूप

- इस आंदोलन का स्वरूप बहुआयामी था। यह सामाजिक एवं धार्मिक दोनों सुधारों से संबद्ध था। इस आंदोलन का मुख्य लक्ष्य समाज सुधार था। चूंकि समाज में अनेक कुरीतियों का समर्थन धर्म के आधार पर किया जाता था अर्थात् सामाजिक जीवन बहुत सीमाओं तक धार्मिक विचारों व मान्यताओं से प्रभावित था। अतः धर्म में सुधारों के बगैर समाज सुधार तर्कहीन था।

- आंदोलन का स्वरूप मूलतः सुधारवादी था, क्रांतिकारी नहीं।। सुधारकों ने धार्मिक बुराईयों को दूर करने के क्रम में धार्मिक आडंबरों पर चोट की न कि उस धर्म को अस्वीकार करने की।

- सुधारों का स्वरूप प्रजातांत्रिक था। इसमें व्यक्ति के अधिकारों एवं उनकी स्वतंत्रता, समानता पर बल दिया गया। आंदोलन में सामाजिक न्याय पर बल दिया गया जो प्रजातांत्रिक स्वरूप की ओर संकेतिक करता है।

- सुधार आंदोलन शैक्षणिक सुधार का स्वरूप लिए हुए था। लगभग सभी सुधार आंदोलनों में शिक्षा के विकास पर बल दिया। महिला शिक्षा पर विशेष बल दिया।

## क्या सुधार आंदोलन भारतीय पुनर्जागरण के रुप में था

- वस्तुतः इतिहासकारों ने इन आंदोलनों को सामूहिक रूप से भारतीय पुनर्जागरण के रूप में दिखाया है। उन्होने ऐसा मत यूरोपीय पुनर्जागरण के परिपेक्ष्य में दिया। उनके अनुसार यूरोपीय पुनर्जागरण में मौजूद तत्व जैसे तर्कवाद, बुद्धिवाद, मानवतावाद, विज्ञान आदि इन आंदोलनों में भी मौजूद थे।

- भारतीय आंदोलन में मानवतावाद का व्यावहारिक पक्ष संकीर्ण था और आंदोलन का दृष्टिकोण वैज्ञानिकता पर आधारित था। सामाजिक सुधार, सामाजिक दबावों व मान्यताओं से पूरी तरह अलग नहीं दिखाई पड़ते हैं।। इस तरह भारतीय पुनर्जागरण यूरोपीय पुनर्जागरण से कई अर्थों में भिन्न था।

## क्या पुनर्जागरण ने भारत का आधुनिकीकरण किया

- कुछ विद्वानों के अनुसार भारतीय धर्मसुधार आंदोलनों में स्वतंत्रता, समानता, मानवतावाद, बुद्धिवाद, वैज्ञानिकता जैसे पश्चिमी दृष्टिकोण शामिल थे और ये आधुनिकता के वाहक रहे हैं।

- इन सुधार आंदोलनों ने धार्मिक एवं सामाजिक अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और क्रूर अमानवीय प्रथाओं का विरोध किया। सामाजिक समता और विशेषकर महिलाओं की स्वतंत्रता का समर्थन किया तथा शिक्षा के माध्यम से आधुनिक ज्ञान, विचार एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जनमानस में प्रतिष्ठित करने की कोशिश की।

- किन्तु वास्तविकता तो यह है कि इन आंदोलनों से भले ही कुछ मौलिक परिवर्तनों की शुरूआत हुई हो, परन्तु इनसे देश का आधुनिकीकरण नहीं हुआ। जिसे आधुनिकीकरण माना गया वह पश्चिमीकरण से कुछ ज्यादा नहीं था।

- भारत में आधुनिकता अंग्रेजी नहीं बल्कि हिन्दी संस्कृत के माध्यम से आ सकती थी और यहां के परम्परागत ज्ञान विज्ञान (आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष आदि) के अध्ययन एवं विकास के जरिए आधुनिक बनाया जा सकता था। जापान व चीन का आधुनिकीकरण इसका ज्वलंत उदाहरण हैं।

## क्या आंदोलन सच्चे अर्थो में धर्मनिरपेक्ष और प्रगतिशील था

- पुनर्जागरण काल का कोई भी आंदोलन धर्म से ऊपर नहीं उठ सका। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन आदि का समग्र चिंतन हिन्दू धर्म पर आधारित तथा अलीगढ़ आंदोलन इस्लाम पर।

- यदि आंदोलन धर्मनिरपेक्ष या सच्चे आर्थो में प्रगतिशील होता, तो यह मौलिक परिवर्तन एवं अंततः आधुनिकता ला सकता था।

## सुधार आंदोलनों की सीमाएं

- ये सभी सुधार आंदोलन समाज के एक बहुत छोटे भाग यानी नगरीय एवं उच्च मध्यवर्ग की आवश्यकताएं पूरी करते थे। इनमें से कोई भी बहुसंख्यक किसानों तथा नगरों की गरीब जनता तक नहीं पहुंचा।

- यह आंदोलन अपनी संकीर्णता धर्मसापेक्ष दृष्टिकोण, सैद्धांतिक अंतर्विरोध एवं ऐतिहासिक संदर्भ में सामाजिक पृष्ठभूमि की यथोचित समझ के अभाव के फलस्वरूप अपने उद्देश्यों में अपेक्षित रूप से सफल नहीं हो पाया। लेकिन इसकी विफलता का एक और भी कारण था, वह था इस आंदोलन का औपनिवेशिक संदर्भ।। राजनीतिक गुलामी की जंजीर में बंधे रहकर सामाजिक या मानसिक स्वतंत्रता और मुक्ति का सारा नारा निरर्थक था।

## सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन के प्रभाव

इनकी सीमाओं के बावजूद 19वीं शताब्दी के सुधार आंदोलनों की उपलब्धि को नजरंदाज करना भूल होगी। आंदोलन के सकारात्मक प्रभाव निम्न रहे:

- शुद्ध रूप से धार्मिक विचारों के अतिरिक्त धर्मसुधार आंदोलनों ने भारतीयों के आत्मविशवास, आत्मसम्मान तथा देश पर गर्व करने की भावना को बढ़ाया।

- धार्मिक अतीत की आधुनिक बुद्धिवादी शब्दों में व्याख्या करके तथा 19वीं शताब्दी के धार्मिक विशवासों से अनेक भ्रामक तथा धर्म विरोधी तत्वों को निकालकर इन सुधारकों ने अनुयायियों को ब्रिटिश अधिकारियो के इस व्यंग्य का उत्तर देने योग्य बनाया कि यहां के धर्म व समाज पतनशील और हीन है।

- स्त्री मुक्ति आंदोलन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। सती प्रथा, बाल हत्या को अवैध घोषित किया जाना, विधवा विवाह को वैध बनाना, लड़कियों के विवाह की आयु सीमा को बढ़ाना आदि महत्वपूर्ण प्रयास किए गए।

- धर्मग्रंथों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ। फलस्वरूप धार्मिक ज्ञान पर पुजारियों एवं धर्माचार्यो का चला आ रहा एकाधिकार समाप्त हो गया। परिणामस्वरूप धर्मग्रंथों की गलत व्याख्या के द्वारा पुजारियों द्वारा जो पाखंड चलाया जा रहा था, वह भी समाप्त हुआ।

## आंदोलन की प्रणाली

- **आंतरिक सुधार** – इसकी शुरूआत राजा राममोहन राय द्वारा की गई। इस प्रणाली के तहत सुधारकों ने समाज के अंदर से ही सुधार पर बल दिया। इस क्रम में पत्र-पत्रिकाएं, किताबें आदि छाप कर लोगों को जागरूक बनाने का प्रयास किया गया।

- **सामाजिक कार्यो द्वारा** - इसके तहत सामाजिक कार्यो के माध्यम से सुधारों पर बल दिया गया। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, डी. के. कर्वे, रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज आदि की भूमिका को इस संदर्भ में समझा जा सकता है।

- **कानूनों में सुधार द्वारा** - इसके तहत सुधारकों ने सुधार के प्रयासों को कानूनी तरीके से लागू करना चाहा। इसमें केशवचंद्र सेन, वीरेशलिंगम, राणाडे आदि शामिल थे। उनके अनुसार प्रभावी सुधारों के लिए राज्य का सहयोग आवश्यक है।

- **प्रतीकात्मक बदलाव** - इसके तहत विशिष्ट विरोधी गतिविधियों द्वारा प्रतीकात्मक बदलाव लाने का प्रयास किया गया।

## सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों का पतन

- 19वीं सदीं में शुरू हुए ये सामाजिक-धर्मिक सुधार आंदोलन 20वीं सदीं के तीसरे दशक में अपनी विशिष्ट पहचान खोने लगे। इसका कारण यह था कि इन सुधार आंदोलनों के तहत, जो मांगे उठाई जाती थीं, अब वे राजनीतिक आंदोलन के एक मुख्य भाग के रूप में सामने आई।

- गांधी के आगमन के पश्चात इन सामाजिक सुधारों को राजनीतिक संघर्ष के अंतर्गत स्थान दिया जाने लगा। गांधी ने अपने राजनीतिक आंदोलनों में रचनात्मक कार्यो पर भी बल दिया। जैसे - हरिजनोत्यान, छूआछूत विरोधी गतिविधियां, महिलाओं का सम्मान, मानवतावाद आदि। ये रचनात्मक कार्य समाज सुधार की कोटि में ही आते थे।

- गांधीवादी नेतृत्व में चले राष्ट्रीय आंदोलन और इसके अंतर्गत उठाए गए सामाजिक सुधार के मुद्दो ने 19वीं सदी के धर्म और समाज सुधार आंदोलनो को अर्थहीन बना दिया।

## राजा राम मोहन राय

**धार्मिक क्षेत्र में उपलब्धियाँ:**

- राजा राममोहन राय ने लगभग सभी धर्म का अध्ययन किया और वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सभी धर्म सत्य हैं, लेकिन कर्मकांड उन्हे दूषित कर देते हैं।।

- राजा राममोहन राय की पहली दार्शनिक कृति तुहफत उल मुजाहिदीन 1803-04 में प्रकाशित हुई, जिसमें मूर्ति पूजा का विरोध किया गया तथा एकेश्वरवाद को सब धर्मो का मूल बताया गया।

- 1815 में राममोहन ने आत्मीय सभा का गठन किया और 1816 में वेदांत सोसायटी की स्थापना की।

- 1829 में उन्होंने ब्रह्म सभा की स्थापना की, जिसका उद्देश्य हिन्दू धर्म में सुधार लाना था। इसको बाद में ब्रह्म समाज कहा गया। इस संस्था के दो आधार थे - तर्क शक्ति और वेद तथा उपनिषद।

**सामाजिक क्षेत्र में उपलब्धियाँ:**

- राजा राममोहन राय ने जिस तरह हिन्दू धर्म को सुधारने का काम किया उसी तरह उन्होने सामाजिक क्षेत्र में भी सुधारों की नींव रखी।

- उन्होंने जाति प्रथा, सती प्रथा, विधवा प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। उनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि सती प्रथा के विरूद्ध कानून बनवाने की रही।

- वे स्त्रियों के अधिकार के भी समर्थक थे। उन्होने बहुविवाह का विरोध किया और औरतों को आर्थिक अधिकार देने का समर्थन दिया।

**पत्रकारिता में उपलब्धियाँ:**

- राजा राममोहन राय भारतीय पत्रकारिता के भी अग्रदूत थे।
- उन्होने स्वयं बंगाली पत्रिका संवाद कौमुदी का प्रकाशन किया।
- 1822 में मिरातुल अखबार (फारसी) का प्रकाशन किया।
- 1829 में हिन्दी में बगदूत नामक समाचार पत्र निकाला।
- 1833 में उन्होने समाचार पत्रों के प्रतिबंध के विरूद्ध प्रबल आंदोलन किया।
- 1835 में समाचार पत्रों को जो कुछ स्वतंत्रता मिली, वह राजा जी द्वारा चलाए गए आंदोलन का परिणाम थी।

**राजनीतिक क्षेत्र में उपलब्धियाँ:**

- वे उदारवादी विचारों के पोषक थे। अतः उन्होने आमूल परिवर्तन की जगह भारतीय प्रशासन सुधार के लिए आंदोलन किया।
- ब्रिटिश संसद द्वारा भारतीय मामलों पर परामर्श किए जाने वाले वे प्रथम भारतीय थे।
- बंगाली जमींदारों द्वारा कृषकों के शोषण की आलोचना की। उन्होंने भेदभावपूर्ण आयात-निर्यात नीति का विरोध किया।
- उन्होने अपने देशवासियों में राजनीतिक जागरण पैदा करने का भी प्रयास किया।

## यंग बंगाल आंदोलन

- यंग बंगाल आंदोलन का नेता और प्रेरक नौजवान एंग्लो-इंडियन हेनरी विवियन डेरोजिओ था। उसने 1826 से 1831 तक हिन्दु कॉलेज में पढ़ाया। उसने महान फ्रांसीसी क्रांति से प्रेरणा ग्रहण की और अपने जमाने के अत्यंत क्रांतिकारी विचारो को अपनाया।

- डेरोजिओ को उसकी क्रांतिकारिता के कारण 1831 में हिन्दु कॉलेज से हटा दिया गया और उसके तुरंत बाद, 22 वर्ष की आयु में हैजे से उसकी मृत्यु हो गयी।

- उसके अनुयायियों ने पुरानी प्रथाओ, कृत्यो और रिवाजो की घोर आलोचना की। वे नारी के पक्के हिमायती थे। उन्होने नारी शिक्षा की मांग की, लेकिन वे किसी आंदोलन को जन्म देने में सफल नहीं हुए।

- ऐसा कोई वर्ग या समूह नहीं था, जो उनके प्रगतिशील विचारो का समर्थन करता। यही नहीं वे जनता के साथ अपने संपर्क नहीं बना सके। वस्तुतः उनकी क्रांतिकारिता किताबी थी, वे भारतीय वास्तविकता को पूरी तरह से समझने में असफल रहे।

- डेरोजिओ के अनुयायियों ने जनता को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रश्नो पर समाचारपत्रो, पुस्तिकाओ और सार्वजनिक संस्थानो द्वारा शिक्षित करने की राममोहन राय की परंपरा को आगे बढ़ाया। उन्होने कंपनी के चार्टर के संशोधन, प्रेस की स्वतंत्रता, विदेश स्थित ब्रिटिश उपनिवेशो में भारतीय मजदूरो के साथ बेहतर व्यवहार, जूरी द्वारा मुकदमो की सुनवाई, अत्याचारी जमींदारो से रैयतो की सुरक्षा और सरकरी सेवाओ में उच्चतर वेतनमानो से भारतीय रोजगार देने जैसे सार्वजनिक प्रश्नो पर आम आंदोलन चलाए।

## ब्रह्म समाज

- राजा राममोहन राय की ब्रह्म परंपरा को 1843 के बाद देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने आगे बढ़ाया। 1866 के बाद इस आंदोलन को केशवचंद्र सेन ने आगे जारी रखा।

- ब्रह्म समाज ने हिन्दु धर्म की कुरीतियों को हटाकर, उसे एक ईश्वर की पूजा पर आधारित करके तथा वेदो को अनुल्लंघनीय न मानकर भी वेदो तथा उपनिषदो की शिक्षाओ के आधार पर उसमें सुधार लाने की कोशिश की। इसने आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के बेहतरीन तत्वो को अपनाने की भी कोशिश की।

- इसने अपना आधार मानव बुद्धि को बनाया तथा उसे यह जांचने की कसौटी बतलाया कि प्राचीन या वर्तमान धार्मिक सिद्धांतो और व्यवहारो में क्या उपयोंगी तथा क्या अनुपयोंगी है।

- उन्होने जाति प्रथा तथा बाल विवाह का जमकर विरोध किया। विधवा पुनर्विवाह समेत स्त्री कल्याण के सभी उपायों तथा स्त्री-पुरुष के बीच आधुनिक शिक्षा के प्रसार के वे समर्थक थे।

- ब्रह्म समाज अपने आंतरिक कलह के कारण 19वीं सदी के उत्तरार्ध में कमजोर पड़ गया। इसके अलावा इसका प्रभाव अधिकांशत: नगरीय शिक्षित वर्ग तक ही सीमित था। फिर भी 19वीं तथा 20वीं सदी में बंगाल तथा शेष भारत के बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

## महाराष्ट्र में धार्मिक सुधार आंदोलन (परमहंस मंडली)

- 1849 में महाराष्ट्र में परमहंस मंडली की स्थापना की गयी। इसके संस्थापक आस्तिक थे तथा मूल रुप से उनकी दिलचस्पी जात-पात के बंधनो को तोड़ने में थी।

- कुछ पड़े लिखे युवको ने मिलकर 1848 में छात्रो की एक साहित्यिक और वैज्ञानिक संस्था बनाई। इसकी दो शाखाएं थीं - गुजराती और मराठी ध्यान प्रसारक मंडलियां। महिलाओ की शिक्षा के लिए स्कूल आरंभ करना भी, इसके लक्ष्यो में से एक था। 1851 में ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी ने पूणा में लड़कियों का एक स्कूल खोला इसके तत्काल बाद और कई स्कूल खोले गए।

- बंबई प्रांत में धार्मिक सुधार कार्य का आरंभ 1840 में परमहंस मंडली ने आरंभ किया। इसका उद्देश्य मूर्तिपूजा तथा जाति प्रथा का विरोध करना था। पश्चिमी भारत के पहले धार्मिक सुधारक संभवतः गोपाल हरि देशमुख थे, जिन्हें जनता "लोकहितवादी" कहती थी।

- उन्होने कहा कि अगर धर्म सामाजिक सुधार की अनुमति नहीं देता तो उसे बदल दिया जाना चाहिए। इसका कारण है कि धर्म को मनुष्य ने ही बनाया है और बहुत पहले लिखे गए धर्मग्रंथ हो सकता है कि बाद के काल के लिए प्रासंगिक न रह जाएं।

## दयानंद सरस्वती एवं आर्यसमाज

- दयानंद सरस्वती ने वेदों को मूलस्रोत माना। उनके अनुसार समस्त ज्ञान वेदों में निहित है। उन्होंने उत्तर भारत के हिंदू धर्म के सुधार का बीड़ा उठाया। सत्यार्थ प्रकाश में अपने विचारों की तर्कपूर्ण प्रस्तुति की।

- 1875 में आर्यसमाज की स्थापना कर 10 सिद्धांतों का निरूपण किया:
  - वेद समस्त ज्ञान के सति हैं।
  - कर्म एवं पुनर्जन्य में विश्वस।
  - ईश्वर निराकार, अनंत, सर्वशक्तिमान है।
  - शुद्धि हेतु यज्ञों का आयोजन अपेक्षित है।
  - प्रत्येक व्यक्ति को सदैव सत्य ग्रहण करने तथा असत्य को त्यागने के लिए तैयार रहना चाहिए।

- अपनी उन्नति के साथ सबकी उन्नति का प्रयास करना चाहिए।
- सबसे बड़ा कर्म परोकार है।
- हिन्दी-संस्कृत भाषा के प्रसार का प्रयत्न।
- ज्ञान का प्रसार अज्ञानता को दूर करने के लिए करना चाहिए।
- बाल-विवाह एवं बहुविवाह का विरोध।

- दयानंद सरस्वती तमाम झूठी शिक्षाओ से भरे प्राचीन धर्मग्रंथो और आज्ञानी पुरोहितो, जिन्होने हिन्दू धर्म को भ्रष्ट कर रखा है, के विरोधी थे।

**आर्यसमाज एवं सामाजिक क्षेत्र:**

- आर्यसमाज के सदस्यों ने पश्चिमी ढंग से शिक्षा के प्रसार के लिए देश भर में स्कूल और कॉलेज का जाल सा बिछा दिया। इस संदर्भ में लाला हंसराज की भूमिका प्रमुख रही तो दूसरी तरफ परंपरावादी शिक्षा के प्रसार के लिए स्वामी श्रद्धानंद ने हरिद्वार के पास गुरूकुल की स्थापना की।

- आर्यसमाजियों ने स्त्रियों की दशा सुधारने एवं शिक्षा का प्रसार करने के लिए विशेष कार्य किया। वे सामाजिक समानता के प्रचारक थे।

- आर्यसमाज में दुर्भिक्ष, अकाल पीड़ितों को सहायता करने का भी संकल्प लिया। 1899 के दुर्भिक्ष के समय अकाल पीड़ितों को राहत सामग्री प्रदान की गई।

## थियोसोफ्रिकल सोसाइटी

- इसकी स्थापना संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के मैडम एच.पी. ब्लावात्सकी तथा कर्नल एच.एस. ओलकाट द्वारा की गई। बाद में ये भारत में आ गए और 1886 में मद्रास के करीब अदियार में उन्होने सोसाइटी का मुख्यालय स्थापित किया।

- थियोसोफिस्ट प्रचार करते थे कि हिन्दुत्व, जरथुस्त्र मत (पारसी धर्म) और बौद्ध मत जैसे प्राचीन धर्मो को पुनस्थापित तथा मजबूत किया जाए। उन्होने आत्मा के पुरागमन के सिद्धांत का भी प्रचार किया। धार्मिक पुनर्स्थापनावादियों के रुप में इन्हें बहुत सफलता नहीं मिली। लेकिन आधुनिक भारत के घटनाक्रमो में उनका एक विशिष्ट योगदान रहा।

- यह पश्चिमी देशो के ऐसे लोगो द्वारा चलाया जा रहा एक आंदोलन था, जो भारतीय धर्मो तथा दार्शिनिक परंपरा का महिमामंडल करते थे। इससे भारतीयों को अपना खोया आत्मविश्वस फिर से पाने में सहायता मिली, हालांकि अतीत की महानता का झूठा गर्व भी इसने उनके अंदर पैदा किया।

## अलीगढ़ आंदोलन एवं सैय्यद अहमद

- मुसलमानों में धार्मिक सुधार आंदेलन का प्रारंभ कुछ देर से हुआ। उच्च वर्गो के मुसलमानों ने पश्चिमी शिक्षा एवं संस्कृति के सम्पर्क से बचने का प्रयास किया। 1857 के विद्रोह के बाद धार्मिक सुधार के आधुनिक विचार उभरने शुरू हुए। इस दिशा का आरंभ 1863 में कलकत्ता में स्थापित मोहम्मडन लिटरेटरी सोसाइटी ने किया। इसने आधुनिक विचारों के

प्रकाश में धार्मिक, सामाजिक, तथा राजनीतिक प्रश्नों पर विचार-विमर्श को बढ़ावा दिया और पश्चिमी शिक्षा अपनाने के लिए उच्च तथा मध्य वर्ग के मुसलमानों को प्रेरित किया।

- मुसलमानों में सबसे प्रमुख सुधारक सैय्यद अहमद खां (1817-98) आधुनिक विचारों से प्रभावित थे।

- वे जीवन भर इस्लाम के साथ आधुनिकीकरण का तालमेल का प्रयास करते रहे। सैय्यद अहमद खां ने कुरान की व्याख्या समकालीन बुद्धिवाद एवं विज्ञान की रोशनी में की। उनके अनुसार कुरान की कोई भी व्याख्या अगर मानव बुद्धि या विज्ञान से टकरा रही है, तो वास्तव में वह गलत व्याख्या है। उन्होने कहा कि धर्म के तत्व भी अपरिवर्तनीय नही है। धर्म अगर समय के साथ नही चलता है, तो वह जड़ हो जाएगा।

- सैय्यद अहमद जीवनभर परंपरा के आधुनिकीकरण, रिवाजों पर भरोसा, अज्ञान तथा अबुद्धिवाद के विरूद्ध संघर्ष करते रहे। उन्होंने लोगों से आलोचनात्मक दृष्टिकोण तथा विचार की स्वतन्त्रता अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि जब तक विचार की स्वतस्कूता विकसित नहीं होती सभ्य जीवन संभव नहीं है। उन्होंने कट्टरपंथ, संकुचित दृष्टि तथा अलग-थलग रहने के खिलाफ भी चेतावनी दी।

- सैय्यद अहमद खाँ का विशवास था कि मुसलमानों का धार्मिक और सामाजिक जीवन आधुनिक पाश्चात्य, वैज्ञानिक ज्ञान और संस्कृति को अपनाकर ही सुधर सकता है। इसलिए आधुनिक शिक्षा का प्रसार उन्होंने जीवन पर्यन्त किया अनेक नगरों में विद्यालय स्थापित किये। पश्चिमी ग्रंथों का उर्दू में अनुवाद कराया।

- 1875 में अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की जो आगे चलकर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के नाम से जाना गया।

- अलीगढ़ कॉलेज चाहे मुस्लिम सुधार के लिए खुला हो, किंतु इसके दरवाजे सभी भारतीयों के लिए खुले थे। इतना ही नहीं इनके अध्यापकों में भी गैर-मुस्लिम शामिल थे और एक तो संस्कृत का प्रोफेसर था। इतना ही नहीं कॉलेज के कोष में हिंदू, पारसियों एवं ईसाइयों ने भी खुलकर दान दिया था।

**सैय्यद अहमद खान में स्वरूपगत परिवर्तन:**

- सैय्यद अहमद अपने जीवन के अंतिम वर्षो में मुसलमानों को उभरते राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल होने से रोकने के लिए बात की। इस क्रम में उन्होंने हिंदूओं के वर्चस्व की शिकायत की, फिर भी वे बुनियादी तौर पर सांप्रदायिक नहीं थे।

- सैय्यद अहमद केवल यह चाहते थे कि मध्य तथा उच्च वर्गो के मुसलमानों का पिछड़ापन समाप्त हो।

- इसलिए उन्होंने सभी भारतीयों विशेषकर शैक्षिक रूप से पिछड़े मुसलमानों को सलाह दी कि वे कुछ समय तक राजनीति से दूर रहें।

- सैय्यद अहमद खान की सहायता जो लोग कर रहे थे उन्हें सामूहिक रूप से अलीगढ़ समूह कहा जाता है। इसमें चिराग अली, नजीर अहमद, मौलाना शिवली नुमनी, उर्दू शायर अल्लाऊ हुसैन हाली आदि प्रमुख थे।

## मोहम्मद इकबाल (1873-1938)

- आधुनिक भारत के महानतम कवियों में एक मोहम्मद इकबाल ने अपनी कविता द्वारा नौजवान मुसलमानों तथा हिंदूओं के दार्शनिक धार्मिक दृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव डाला।

- इकबाल का जन्म 1873 में सियालकोट में हुआ था। उनकी शिक्षा आरंभ में अरबी, फारसी और फिर अंग्रेजी भाषा में हुई। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय और फिर आगे चलकर लंदन विश्वविद्यालय में वकालत की डिग्री हासिल की। वह असाधारण बौद्धिक गुणों से सम्पन्न थे। उनकी अंतरात्मा में इस्लाम के लिए सर्वाधिक लगाव, उसकी महत्वता के लिए गर्व और वर्तमान दुर्दशा के लिए आंतरिक पीड़ा दहकती रहती थी। उनकी रूचि मुखतः धर्मदर्शन साहित्य में थी। उन्होंने ईरान में तत्व-मीमांसा का विकास विषय पर शोध प्रस्तुत किया। जर्मन भाषा सीखी। आगे ब्रिटिश विद्वानों के सम्पर्क में रहे और इसी क्रम में उन्हें सर की उपाधि मिली।

- इकबाल ने अपने चिंतन में यह स्पष्ट किया कि कुरान के आधार पर विकास किया जा सकता है। इस तरह इकबाल को उदारतावादी या रूढ़िवादी श्रेणी में रखना कठिन है। हाँ वह पुनरूत्यानवादी थे। उनका विश्वास था कि हजरत द्वारा शाइउमल इस्लाम में आधुनिक उदारतावादी सभी मूल्य समाहित है और इतना ही नहीं ये इस्लामी मूल्य पाश्चात्य मूल्यों की अपेक्षा कही अधिक सक्षम और मौलिक हैं।

**कार्य-विश्लेषण:**

- स्वामी विवेकानंद की तरह उन्होंने भी निरंतर परिवर्तन एवं अबाध कर्म पर बल दिया। वैराग्य एकातवास की निंदा की और एक गतिमान दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह किया, जो दुनिया को बदलने में सहायक हो। वे मूलतः एक मानवतावादी थे।

- उन्होंने कहा कि मनुष्य को प्रकृति या सत्ताधीशों के अधीन नहीं होना चाहिए, बल्कि निरंतर कर्म द्वारा इस विश्व को नियंत्रित करना चाहिए। उनके विचार से स्थिति को निष्क्रिय रूप से स्वीकार करने से बड़ा कोई पाप नहीं है।

- अपनी आरंभिक कविता में उन्होंने देशभक्ति के गीत गाए, किंतु बाद में मुस्लिम अलगाववाद का समर्थन किया।

## समाजिक सुधार के केन्द्र में महिला

- ब्रिटिशकाल से पूर्व भारतीय नारियों का सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक शोषण होता रहा है और तमाम धार्मिक ग्रंथ इस शोषण को औचित्य प्रदान कर रहे थे। यदा-कदा ग्रंथों में महिला की आदर्श स्थिति दिखाई तो गई पर व्यवहार में वह लागू नहीं की गई। भारतीय महिला समाज की प्रमुख बुराई के रूप में स्थापित थी। सती प्रथा, बालविवाह, बहुपत्नी प्रथा, बालवध, शिक्षा में भेदभाव, विधवा पुर्नविवाह का निषेध, बुनियादी मानवाधिकारों का हनन आदि कुछ ऐसी आम बुराईयां थीं, जो भारतीय समाज में मौजूद थीं। अतः समाज की इस बुराई को दूर करने के लिए सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों ने कदम बढ़ाया।

- 19वीं-20वीं शताब्दी में लगभग सभी सुधार आंदोलनों में नारी उत्थान को प्रमुखता प्रदान की और उसको अधिकारों के प्रति जागरूक किया। राजा राममोहन राय पहले भारतीय थे, जिन्होंने इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिला शिक्षा आर्थिक स्वावलंबन पर बल दिया, सती प्रथा के विरूद्ध कानून बनवाने में भूमिका निभाई।

- भारत के समाज सुधारकों ने महिलाओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया क्योंकि उनको विश्वास था कि शिक्षा से ही जाग्रति आती है और उनका आत्मविश्वास स्वाभिमान बढ़ेगा तथा उनकी स्थिति में सुधार आएगा। इंग्लैण्ड, जर्मनी से आने वाली मिशनरियों ने भी महिला शिक्षा पर बल दिया। विद्यासागर ने बैभून के सहयोग से 1849 में बालिका स्कूल खोला। इन्हीं के प्रयासों से ब्रिटिश शासन द्वारा निर्मित बुड घोषणा पत्र और हंटर आयोग की रिपोर्ट में नारी शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया।

**निष्कर्ष:**

- महिलाओं के अंदर पैदा हुई जागरूकता और स्वाभिमान ने राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी उपस्थिति को महत्वपूर्ण बना दिया। उन्होंने आंदोलनो का नेतृत्व भी किया और जेल भी गई और जब प्रांतों में भारतीय सरकारें बनी तो फिर मंत्री पदों के उत्तरदायित्व को भी संभाला। इस तरह समाज सुधार आंदोलन से जारी महिला सशक्तीकरण की प्रक्रिया आगे बड़ी।

- किंतु समझने की बात यह है कि यह सुधार औपनिवेशिक शासन के अन्तर्गत हो रहा था। अतः इसकी भी अपनी सीमा रही। यह सीमित क्षेत्र एवं सीमित वर्ग को ही लेकर चल पाया। यही वजह है कि स्वतंत्रता के समय भी एक बहुत बड़ी साखा महिला निरक्षरों की थी। आगे चलकर स्वतंत्र भारत सरकार ने इस दिशा में प्रयास किया जो आज भी जारी है।